सत्य ही ईश्वर ळे

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारतीय संस्कृति सत्य की उपासक है। इसमें सत्य को ईश्वर कहा गया है। वाल्मीकि रामायण में लिखा है, सत्यमेवेश्वरो लोके सत्ये धर्मः सदाश्रितः अर्थात् लोक में सत्य ही ईश्वर है। धर्म सदा सत्य में ही रहता है। वेद, शास्त्र एवं पुराणों में कहा गया है कि सत्य के समान दूसरा धर्म नहीं है। सच बोलने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि तुम्हें याद नहीं रखना पड़ता कि तुमने किससे कहां क्या कहा था। झूठ में आकर्षण हो सकता है, पर स्थिरता तो सत्य में है। सत्य वचन सुनने और बोलने से बढ़कर आनंदप्रद और कुछ भी नहीं है। महात्मा गांधी ने कहा है कि सत्य से भिन्न कोई परमेश्वर है, ऐसा मैंने कभी अनुभव नहीं किया। उन्होंने तो अपनी आत्मकथा का नाम ही 'सत्य के प्रयोग' रखा। मनुष्य लोभ के वशीभूत होकर झूठ बोलता है। बालक अपने शैशवकाल में सत्य ही बोलता है, पर हम अपने स्वार्थवश उसे असत्य की राह पकड़ा देते हैं।

सत्य का मार्ग तलवार की धार के समान है। उस पर चलते समय बहुत सावधानी रखनी पड़ती है। एक सत्यार्थी को सत्य के लिए सावधानी भी रखनी चाहिए। सत्य का मतलब सिर्फ दूसरों का भंडाफोड़ करना नहीं होता। किसी की पोल नहीं खोलनी है। अंधे को अंधा और काणे को काणा कहना तथ्य हो सकता है, पर सत्य नहीं हो सकता। तथ्य जब अहितकर होता है, तब वह असत्य बन जाता है। लिखना, बोलना और बातों को उसी रूप में कह देना सत्य नहीं है। उसके पीछे सत्य के प्रति अनुराग, भावना, प्रेरणा और चिंतन भी चाहिए। सत्यनिष्ठ साधक दुखों से घिरा रहकर भी घबराता नहीं और न विचलित ही होता है। गीता में लिखा है, जो असत् है उसका कभी जन्म नहीं हो सकता और जो सत्य है उसका कभी विनाश नहीं हो सकता। सत्य को संसार में सर्वोपरि समझें।

बाहर से उजला सदा भीतर मैला अंग।

तासे तो कौवा भला तन मन एक ही रंग।।

कौवे को कुटिल, मलिन और चालाक माना जाता है, पर वह उनसे अच्छा है, जो बाहर से साफ दिखाई देते हैं, मगर आंतरिक रूप से कलुषित मन वाले हैं। कौवा तो अंदर बाहर से एक समान काला है। कम से कम धोखा तो नहीं देता। चाणक्य ने लिखा है– सत्य से ही पृथ्वी स्थिर है, सत्य से ही वायु चलती है। सत्य से सूरज तपता है, सारा जगत भी सत्य के कारण टिका है।

मृत्यु सत्य है किन्तु ईश्वर परम सत्य है। जिस प्रकार तार में बिजली दिखाई नहीं देती है, उसी प्रकार जीवों के शरीर में विद्यमान परमात्मा भी दिखाई नहीं देता है। भागवत कथा में ताली पीटने वाला व्यक्ति जीवन में कभी माथा नहीं पीटता है। भागवत कथा का श्रवण से मानव के भीतर का साधुत्व जागृत होता है और ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ता है। सत्य की राह कठिन होती है, जो इस राह पर चलता है वह परेशान होता है। लेकिन आखिर में सत्य की ही जीत होती है।

जीवन में जब भी बुरा समय आता है तब मनुष्य भगवान को याद करता है। अच्छे समय में मनुष्य भगवान को भूल जाता है। यदि अच्छे समय में भगवान को याद कर लिया जाए तो बुरा समय आए ही नहीं। भगवान भाव के भूखे हैं जो कोई उन्हें मन से पुकारता है प्रभु उसके पास दौड़े चले आते हैं। बिना हरि कृपा के भागवत श्रवण सुख प्राप्ति संभव नहीं है। भागवत की नैया और शुकदेवजी की पतवार लेकर जो प्राणी संसार सागर में चलता है। वह ईश कृपा का पात्र बनकर राजा परिक्षित की भांति भवसागर से तर जाता है। मनुष्य को जीवन में सत्य और धर्म का साथ नहीं छोडऩा चाहिए। भगवान की कृपा सत्य मार्ग पर चलने वाले लोगों पर जरूर होती है।

हमारे देश में सत्यवादी राजा हरिशचन्द्र हुए। जिनकी सत्यवादिता का उदाहरण आज प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाता है। महाराज दशरथ ने सत्य के लिए प्राण त्याग दिये। भगवान राम सत्य के लिए राज पाट छोड़कर चौदह वर्ष तक वन में वास किया। प्राण जाये पर वचन न जाये रघुकुल की परम्परा थी। सत्य के लिए ऋषि मुनि महात्मा लोग प्रकृति के अंचल में रहकर उपासन करते हैं और सत्य को प्राप्त करते हैं। सत्य के स्वरूप को समझने के लिए

यह आवश्यक है कि इसके बाह्य स्वरूप और आंतरिक स्वरूप का परीक्षण किया जाये। एक तो है बाहर का सत्य, जिसे हम अपनी स्थूल आंखों से देखते हैं। एक ही वस्तु को कोई सत्य कहता है और कोई असत्य। कोई सत्य असत्य का मिथुनीकरण कर देता है। बाह्य सत्य पूर्ण सत्य नहीं होता। वस्तु का स्वरूप जिसको जैसा दिखाई देता है, उसी रूप में वह सत्य को स्वीकार करता है। किन्तु आंतरिक सत्य एकसमान होता है। वहां सत्यं शिवं सून्दरम् की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। सत्य व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा होती है। न्यायालयों में न्यायाधीश सत्य का ही परीक्षण करता है। एक झूठ को छिपाने के लिये अनेक झूठ बोले जाते हैं। जिससे सत्य का स्वरूप ही छिप जाता है। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर स्वामी सत्य की खोज में जगह–जगह भटके, घोर साधन की। किन्तु अंत में उन्होंने यह निश्चय किया कि सत्य बाहर नहीं अंदर है।